ईप्सितं तदवज्ञानाद्विद्धि सार्गलमात्मनः ।

प्रतिबध्नाति हि श्रेयः पूज्यपूजाव्यतिक्रमः ।।79।।

अन्वय तदवज्ञानात् आत्मनः ईप्सितं सार्गलं विद्धि, हि पूज्यपूजाव्यातिक्रम श्रेयः बध्नाति।

अनुवाद इसलिए उस (कामधेनु) का अनादर करने से आप अपने मनोरथ (की सिद्धि) को रुका हुआ समझो, क्योंकि पूजनीय व्यक्तियों की पूजा का उल्लंघन कल्याण को रोकता है (कल्याण में बाधा डालता है)।

टिप्पणियाँ

ईप्सितम् धातु आप् सन् (इच्छार्थक) क्त । आपकी इच्छित वस्तु अर्थात् पुत्रप्राप्ति।

तदवज्ञानात् तस्याः अवज्ञानात् (अव ज्ञा ल्युट्,) षष्ठी तत्पुरुष, पंचमी एकवचन। उस गाय के अपमान से।

सार्गलम् अर्गलया सह वर्तमानम् (बहुव्रीहि)। अर्गला-जंजीर। श्रृंखला से बँधा हुआ अर्थात् रुका हुआ।

विद्धि धातु विद् लोट्, मध्यम पुरुष, एकवचन, तुम समझो, जानो।

पूज्यपूजा पूज्यानां पूजा इति पूज्यपूजा, पूज्यपूजायाः व्यतिक्रमः इति (षष्ठी तत्पुरुष), पूजनीय व्यक्यिों की पूजा का उल्लंघन अर्थात् पूज्य लोगों की पूजा न करना।

विशेष भारतीय लोग आदरणीय व्यक्तियों के प्रति आदर प्रदर्शन करना परम धर्म मानते हैं। वास्तव में वह ऐसा कर्त्तव्य है कि प्रत्येक को इसका पालन करना चाहिए। जैसा मनु कहते हैं-

''ऊर्ध्वन् प्राणा ह्युत्क्रमानन्ति यूनः स्थविर आयाति।

प्रत्युत्त्थानाभिवादाभ्यां पुनस्तान् प्रतिद्यते''।। (2/120)

जब कोई ज्येष्ठ व्यक्ति अथवा महापुरुष दिखाई देता है तब कनिष्ठ व्यक्ति के जीवनाधायक प्राण उत्क्रमण करते (निकलने लगते) हैं। परन्तु जब वह कनिष्ठ ज्येष्ठ व्यक्ति के प्रति अपने स्थान से उठकर सम्मान प्रकट करता है और उसे प्रणाम करता है तो उसके प्राण पुनः पूर्ववत् उसके शरीर में स्थिर हो जाते हैं। अतएव ज्येष्ठ व्यक्ति के प्रति सम्मान प्रदर्शन को भारतीय संस्कृति में अत्यधिक महत्त्व दिया गया है। इसी सन्दर्भ में अन्यत्र भी मनु ने कहा है-

''अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम्''।। (2/121)

अर्थात् जो व्यक्ति सदा वृद्ध लोगों को प्रणाम करता है उसकी आयु, विद्या, यश और बल बढ़ते हैं। अतः वृद्धों को प्रणाम करना परम कर्त्तव्य है तथा लाभदायक है। इसी तथ्य को कालिदास ने यहां विधि रूप में न कहकर निषेध रूप में कहा है कि पूजनीय व्यक्तियों का निरादर करने वाले व्यक्ति के मनोरथ तथा कल्याण में बाधा पड़ती है। आदरणीयों के प्रति आदर प्रदर्शन न करने से हानि होती है। दिलीप ने पूज्य कामधेनु के प्रति भूल से आदर प्रदर्शित नहीं किया जिससे उसे हानि यह हुई कि सन्तान की प्राप्ति रूक गई। देखिए-

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्यपूजाव्यतिक्रमः। त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षं मरणं भयम्।।